CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

॥ श्रीः ॥

अथ

यज्ञोपवीतपद्धतिः ।

बांसबरेलीनिवासिपंडित—मुकुंदरामकृत-

भाषाटीकासहिता ।

सेयं

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

मालिक—"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

कल्याण--बंबई.

संवत् २०११, शके १८७६.

1954

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वेङ्कटेश्वर बुक डिपो
चौक, बनारस।

मुद्रक और प्रकाशक-
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
मालिक-"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, कल्याण-बम्बई.

सन् १८६७ के आक्ट २५ के मुजब रजिष्टरी सब
हक्क प्रकाशकने अपने आधीन रखा है।

बुक डिपो
बनारस।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीगणेशायनमः ।

अथ

यज्ञोपवीतपद्धतिः ।

भाषाटीकासहिता

ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्यं विप्रस्य पंचमे ॥
राज्ञो बलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्येहार्थिनोऽष्टमे ॥ १ ॥

वेदाध्ययननिमित्त जो तेज बढाया जाता है सो ब्रह्मतेज उसकी कामना[1]वाले ब्राह्मणका उपनयन कर्म पांचवें वर्ष और बलकी इच्छावाले क्षत्रियका छठे वर्ष तथा बहुतसी कृषि आदिकी चेष्टावाले वैश्यका आठवें वर्ष उपनयन संस्कार होना योग्य है ॥ १ ॥

गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनायनम् ॥
गर्भादेकादशे राज्ञो गर्भात्तु द्वादशे विशः ॥ २ ॥

गर्भसे वा जन्मसे ब्राह्मणका आठवें वर्ष, गर्भसे वा जन्मसे क्षत्रियका ग्यारहवें वर्ष, गर्भसे वा जन्मसे वैश्यका बारहवें वर्ष उपनयनसंस्कार होना चाहिये ॥ २ ॥

आषोडशाद्ब्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्तते ॥
आद्वाविंशात्क्षत्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ॥ ३ ॥

सोलह वर्षपर्यन्त ब्राह्मणकी सावित्री (गायत्री) अर्थात् उपनयनका समय व्यतीत नहीं होता है, क्षत्रियका बाईस

---

१ यहां बालकके पिताकी कामना समझना चाहिये ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वर्ष और वैश्यका चौबीस वर्षपर्यन्त उपनयनका समय व्यतीत नहीं होता है ॥ ३ ॥

अत ऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः ॥
सावित्रीपतिता व्रात्या भवन्त्यार्यविगर्हिताः ॥ ४ ॥

इस पूर्वोक्त कालके व्यतीत हो जानेपर तीनों वर्णोंकी सावित्री पतित हो जाती है और श्रेष्ठ पुरुषोंसे निंदित हो जाते हैं तथा व्रात्यसंज्ञा हो जाती है ॥ ४ ॥

जब उपनयनसंस्कारका समय हो तब पंडितसे मुहूर्त पूंछे उसी मूहूर्तके अनुसार देशरीतिसे घान यंत्रीपूजन स्तम्भारोपणादि कृत्य करके उपनयनकर्मके दिन शुभ लग्नमें जिस कुमारका यज्ञोपवीत करना है उसको आठ कुमारोंके बीच सिखरन वा भात भोजन कराय मंडपके नीचे आंगनको लिपवाय चौक पूरकर मंडपके बाहर कुमारके शिरपर फेरवा रखाय उवटना लगवाय स्नान करावे और कुमारका पिता मंडपके नीचे पवित्रतापूर्वक आवे और पूर्व वा उत्तरमुख आसन बिछाय बैठे और आचमन कर आचार्यके चरण प्रक्षालन करे फिर रोचनाक्षत लगाय फूल माला पहिराय दाहिने हाथमें जलाक्षत पान सुपारी अंगौछा एक रुपया ले आचार्यका गोत्र नाम आदिका उच्चारण करके यह संकल्प पढे ।

ॐ विष्णोर्विष्णोर्विष्णोराद्यों नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतिमे कलौ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

युगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्ते पुण्यक्षेत्रे यथानामसम्वत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे यथा योगकरणमुहूर्तलग्नेषु यथाराशिस्थिते गुरौ यथाराशि स्थितेऽर्के यथास्थानेष्वन्यग्रहेषु एवं गुणविशेषणवि-शिष्टायां शुभपुण्यतिथौ परमेश्वराज्ञारूपसकलशास्त्र-श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तपुण्यफलप्राप्तिकामः मम पुत्रस्यो-पनयनवेदारम्भसमावर्तनकर्म कर्तुं अमुकगोत्रं अमुक-शर्माणं अमुकशाखाध्यायिनं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचंद-नताम्बूलद्रव्यवासोभिः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे ॥

फिर आचार्य वरण लेके 'वृतोऽस्मि' यह कहकर अक्षत लेवे और यजमानपर छोडे तब यह पढे ।

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥ १ ॥

फिर आचार्य कांसेके पात्रमें अग्नि मंगाय पंचभूसंस्कार करे ।

तत्र कुशैर्हस्तपरिमितां चतुरस्रां भूमिं परिसमुह्य तानैशान्यां निक्षिप्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेन प्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण प्रागग्रान्त्रिरुल्लिख्य उल्लेखन-क्रमेणानामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुद्धृत्य वारिणा तं देशमभ्युक्ष्य तान्पंचभूसंस्कारान्कृत्वा लौकिकाग्निं स्थापयेत् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तहां हवन करनेके निमित्त एक मुट्ठीभर कुश लेके चौकोन भूमि बुहारे फिर उन कुशोंको ईशानकी ओर फेंककर वेदीको जल और गोबरसे लीपे अनन्तर वेदीको हाथसे बराबर कर खैरके स्रुवासे वेदीकी मिट्टी छीले व स्रुवासेही तीन रेखा एकसे एक उत्तरको करे और अंगूठे व छगुनीके पासकी अंगुलीसे वेदीकी थोडी मिट्टी उठाकर बाहर फेंक जल छिडक देवे इस प्रकार यह पंचभूसंस्कार करके अग्नि स्थापन करे फिर अग्निपर अक्षत छोडे और यह पढे ।

ॐ शांडिल्यगोत्र पावकनामाग्ने
इहागच्छ इहातिष्ठ ॥

फिर आचार्य प्राणायाम करे और कुमार स्नान कर पुष्पमाला पहिर पितर व देवताओंकी कोठरीमें जाय प्रणाम कर अंजुली भराय सुपारी पैसा रखकर मंडपके नीचे आवे तब आचार्य यह पढे ।

ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥

फिर आचार्य कुमारको पटापर पूर्वमुख बिठाय अंजलीका पदार्थ ले लेवें और हाथमें जलाक्षतादि लेके यह संकल्प करे अमुकके स्थानमें कुमारका नाम लेवे।

ॐ तत्सदद्येत्यादि० अस्य कुमारस्य बीजगर्भदुरितक्षयपूर्वकवेदाध्ययनादिवैदिककर्माधिकारसम्पादक-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्वि त्वसंसिद्धिकामोऽमुककुमारस्योपनयनमहं करिष्ये ॥

अनन्तर कुमार आचार्यके सन्मुख हाथ जोडे तब आचार्य बालकसे पूछे । ॐ ब्रह्मचर्यमागाम्–तुम ब्रह्मचारी होवोगे । तब कुमार कहे कि । ॐ ब्रह्मचर्यमागाम्–हां हम ब्रह्मचारी होंगे । अनन्तर आचार्य यह पूछे । ॐ ब्रह्मचार्य सानि–किसके ब्रह्मचारी होगे । तब कुमार यह उत्तर देवे कि । ॐ ब्रह्मचार्यसानि–हम तुमारे ब्रह्मचारी होंगे ।

अनन्तर कहीं यह भी रीति है कि आचार्यको धोतीका जोडा दिया जाता है सो संकल्प पढकर देवे फिर आचार्य कुमारको वस्त्र (कोपीन और आहत वस्त्र) पहिरावे तहां पहले विनियोग[1] करे अर्थात् हाथमें अथवा आचमनीसे जल लेके भूमिपर छोडे ।

ॐ येनेन्द्रायेत्यंगिरा ऋषिः बृहस्पतिर्देवता बृहती छन्दो वासःपरिधाने विनियोगः ॥

फिर वस्त्र पहिरावे तब यह पढे ।

ॐ येनेन्द्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतं तेन त्वा परिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे ॥

---

१ इस पुस्तकमें जहां जहां विनियोग लिखा होवे वहां वहां हाथमें जल लेके भूमिपर छोडे अथवा आचमनीसे जल भूमिपर छोडे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फिर कुमारको दो वार आचमन कराय विनियोग करने उपरान्त कमरपर मेखला बांधे और यह पढे ।

इयं दुरुक्तमिति वामदेव ऋषिः मेखला देवता त्रिष्टुप्छन्दः मेखलाबन्धने विनियोगः ॥ इयं दुरुक्तं परिबाधमाना वर्णं पवित्रं पुनतीम आगात् । प्राणापानाभ्यां बलमादधाना स्वसादेवी सुभगा मेखलेयम् ॥ ॐ युवा सुवासा परिवीत आगात्स उ श्रेयान्भवति जायमानः । तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥

तदनन्तर कुमारकी शिखाआचार्य बांधे और यह पढे

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ॐ मानस्तोके तनयमान आयुषि मानो गोषु मानो अश्वेषुरीरिषः । मानो वीरान् रुद्र भाविनो वधीर्हविष्मतः सदमित्त्वा हवामहे ॥

फिर कुमार अपने दाहिने हाथमें पांच वा सात जोडा जनेऊ व यथाशक्ति दक्षिणा लेके यह संकल्प पढकर ब्राह्मणोंको देवे ।

ॐ तत्सदद्येत्यादि० मम ब्रह्मवर्चसकामनया एतानि यज्ञोपवीतानि सफलानि सदक्षिणानि बृहस्पतिदैवतानि नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे॥

---

१ रज्जुः षोडशहस्तः स्यात्पंचहस्तस्तु मेखला ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनन्तर कुमारके हाथसे सब वस्तु लेके ब्रह्मणोंको देवे यहां ब्राह्मणोंको अष्ट भाजन देते हैं सो संकल्प यह है ।

ॐ तत्सदद्यामुकगोत्रोऽमुकशर्माहं स्वकीयोपनयनकर्म नपयकसंस्कारप्राप्त्यर्थमिदं भाण्डाष्टतयं सयज्ञोपवीतं सदक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः सम्प्रददे ॥

फिर आचार्य कुमारको यज्ञोपवीत पहिरावे तहां पहले विनियोग करे । यज्ञोपवीत पहिराते समय यह पढे ।

ॐ यज्ञोपवीतमिति परमेष्ठी ऋषिर्लिंगोक्ता देवता त्रिष्टुप्छन्दः यज्ञोपवीतपरिधाने विनियोगः ॥ ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

अनन्तर कुमारको दो वार आचमन कराय विनियोगके उपरान्त मृगचर्म पहिरावे तब यह पढे ।

ॐ मित्रस्य चक्षुरिति विश्वामित्र ऋषिर्वरुणो देवता शक्वरी छन्दः कृष्णाजिनपरिधाने विनियोगः ॥

ॐ मित्रस्य चक्षुर्द्धरुणं बलीयस्तेजो यशस्वि स्थविरं समिद्धम् । अनाहनस्यं वसनं जरिष्णु परीदं वाज्यजिनं दधेहि ॥

फिर नीचे लिखे वचनको पढकर विनियोगपूर्वक ब्रह्मचारीके केशपर्यन्त ढाकका दंड देवे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ॐ यो मे दंड इति प्रजापति ऋषिर्दंडो देवता यजुः दंडपरिग्रहणे विनियोगः ॥

ॐ यो मे दण्डः परापतद्वैहायसोधिभूम्याम् । तमहं पुनरादद आयुसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय ॥

फिर कुमारके दोनों हाथोंमें जल भराय आचमनीसे जल लेके पहले विनियोग करे भूमिपर जल छोडकर सात मंत्र पढकर कुशोंसे जल लेके कुमारके शिरपर छिडके आठवां मंत्र पढकर भूमिपर छिडके फिर नवां मंत्र पढकर शिरपर छिडके ।

आपोहिष्ठेत्यादीनां सिन्धुद्वीपऋषिः आपो देवता गायत्री छन्दः शिरोऽभिषेचने विनियोगः ॥

ॐ आपोहिष्ठामयो भुवः १ । ॐ तान ऊर्जे दधातनः २ । ॐ महेरणाय चक्षसे ३ । ॐ योवः शिवतमो रसः ४ । ॐ तस्य भाजयते हनः ५ । ॐ उशतीरिव मातरः ६ । ॐ तस्माअरंग मामव ७ । ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ ८ । ॐ आपोजनयथाचनः ९ ॥

फिर विनियोग करके सूर्यको प्रणाम करे तब यह पढे ।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीना स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥

फिर विनियोग करके आचार्य अपने दाहिने हाथसे कुमारके दाहिने कांधेको छूकर हृदयको छुवे तब यह पढे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं तेऽस्तु । मम वाचमेकमना जुषस्व । बृहस्पतिस्त्वा नियुनक्तु मह्यम् ॥

फिर कुमारका दाहिना हाथ पकडकर आचार्य पूछे । को नामासि—क्या नाम है तुम्हारा तब बालक उत्तर देवे कि । श्रीअमुकशर्माहं भो । यहां अमुकके स्थानमें अपना नाम लेवे । फिर आचार्य यह कहे कि । कस्यब्रह्मचार्यसि-किसके ब्रह्मचारी हो । तब कुमार कहे । भवतः—तुमारे । फिर अमुकके स्थानमें अपना नाम लेकर आचार्य यह कहे ।

इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यसि अग्निराचार्यस्तवाहमाचार्यः श्रीअमुकशर्माहं भो ॥

फिर कुमार दोनों हाथ जोडे । तब आचार्य कुमारके हाथ पूर्वकी ओर बढाकर यह पढे । ॐ प्रजापतये त्वा परिददामि । फिर दक्षिणकी ओर हाथ बढाय यह पढे । ॐ देवाय त्वा सवित्रे परिददामि । फिर पश्चिमकी ओर हाथ करके यह पढे । ॐ अद्भ्यस्त्वौषधीभ्यः परिददामि । एवं उत्तरकी ओर हाथ बढावे तब यह पढे । ॐ द्यावापृथिवीभ्यां त्वा परिददामि । एवं नीचे भूमिकी ओर हाथ करके यह पढे । ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यस्त्वा परिददामि । फिर ऊपरको हाथ करे तब यह पढे । ॐ सर्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिददाम्यरिष्ट्यै ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तदनन्तर बालक अग्निकी प्रदक्षिणा कर आचार्यके समीप बाईं ओर बैठ जावे और जिसको ब्रह्मा बनाना हो उसके तीन बार चरण प्रक्षालन करे और रोचना लगाय फूलमाला पहिराय दाहिने हाथमें जलाक्षत सुपारी पान दक्षिणा लेके यह संकल्प पढ ब्रह्माको देवे ।

ॐ तत्सदद्येत्यादि० अद्य कर्तव्यप्रथमोपनयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलपूगीफलद्रव्यवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ॥

कुमारसे वरण लेके ब्रह्मा यह कहे । ॐ वृतोस्मि । फिर होताके चरण प्रक्षालन कर तिलक लगाय दक्षिणादि हाथमें ले संकल्प पढे ।

ॐ तत्सदद्येत्यादि० अद्यकर्तव्येति० होतृत्वेन त्वामहं वृणे । कुमारसे वरण लेके होता ॐस्वस्ति यह कहे । फिर ब्रह्मा और होतासे आचार्य पृथक् पृथक् यह कहे । ॐयथाविहितं कर्म कुरु—अपने योग्य कर्म करो । यह सुन ब्रह्मा और होता पृथक् पृथक् उत्तर देवे । ॐकरवाणि-करेंगे ।

तदनन्तर आचार्य अग्निसे दक्षिण आसन बिछाय उसपर पश्चिम ओर कुशोंकी जड करके बिछा देवे और ब्रह्माको अग्निकी प्रदक्षिणा कराय यह वाक्य कहे । अस्मिन्कर्मणि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वं मे ब्रह्मा भव—इस कर्ममें तुम हमारे ब्रह्मा होओ । तब ब्रह्मा यह कहे । भवानि—हुए ।

अथ कुशकंडिकाकृत्य !

उदुपरि ब्रह्माणमुदङ्मुखमुपवेशयेत् ततः प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् ॥

तिस पीछे ब्रह्माको उत्तरमुख बिठावे तदनन्तर आचार्य काठके बने हुए प्रणीतापात्रको सामने रख जलसे भरकर (इक्यासी) कुशोंसे आच्छादन (झांप) कर ब्रह्माका मुख देखकरके अग्निसे उत्तरकी ओर दो कुशोंको डाले उन्हीं कुशोंपर प्रणीताको धरे ।

ततः परिस्तरणं बर्हिषश्चतुर्थभागमादायाग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तगर्भकुशद्वयं प्रोक्षणीपात्रमाज्यस्थालीसंमार्जनार्थं कुशाः उपयमनकुशाः समिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं षट्पंचाशदुत्तरवार्यमुष्टिशतद्वयावच्छिन्नामतण्डुलपूर्णपात्र । पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम् ॥

तदनन्तर प्रणीतापात्रसे इक्कीस कुशोंको लेके एक हाथमें रख बीस कुशोंको दक्षिण व पूर्वके बीचसे उत्तर और पूर्वके बीचतक और फिर बीसही कुशोंको दक्षिण व पश्चिमके बी-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चसे उत्तर पश्चिमके बीचतक वेदीके किनारे २ बिछावे, तथा बीसही कुशोंको लेकर ब्रह्मासे अग्नितक व बीस कुशोंको अग्निसे प्रणीतातक बिछावे फिर अग्निसे उत्तरकी ओर तीन पवित्र छेदन नामके कुशोंको रक्खे और अग्निसे पश्चिमकी ओर पवित्र नामके दो कुशोंको रक्खे और घी व खीरके पात्रोंको पोंछनेके निमित्त पांच कुशोंको व उपयमन नामके सात कुशोंको धरे और अंगूठेसे छँगुनियां तककी ढांककी तीन समिधा व खैरका स्रुवा व गौका घी और दो सौ मुट्ठी (साढे सात सेर) चावलोंसे भरा हुआ पूर्ण पात्र इन सबको पवित्र छेदन कुशोंसे क्रमपूर्वक एक एक करके पूर्वकी ओरको रक्खे ।

तत्र पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्त्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधायानामिकांगुष्ठाभ्यां गृहीत्वा पवित्राभ्यां तज्जलं किंचित्त्रिरुत्क्षिप्य प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीं त्रिरभिषिच्य । प्रोक्षणीजलेन सादितवस्तुसेचनं कृत्वाऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात् ॥

फिर पवित्रछेदन नामक तीन कुशोंसे पवित्र नामके दोनों कुशोंको काटे और पवित्र छेदन कुशोंको फेंककर पवित्रकुशोंसे प्रणीताके जलको तीन वार प्रोक्षणीपात्रमें छिडककर पात्रको भर लेवे फिर उन्हीं कुशोंको दाहिने हाथके अँगूठेसे छँगुनियाके पासकी अंगुलीमें व प्रोक्षणीपात्रको वायें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हाथमें रख व उन्हीं कुशोंसे प्रोक्षणीपात्रके जलको सब रक्खी हुई सामग्रियोंमें छिडकके प्रणीता और अग्निके बीचमें प्रोक्षणीपात्रको रख देवे ।

तत आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापोऽधिश्रयणं ततः कुशं प्रज्वाल्याज्यस्याग्नेश्चोपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षिप्य स्रुवं त्रिः प्रतप्य संमार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं सम्मृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिः प्रतप्याग्नेर्दक्षिणतो निदध्यात् ॥

तदनन्तर घी छोडनेके निमित्त रक्खे हुए पात्रमें घी छोडे एवं खीरके निमित्त रक्खे हुए पात्रमें खीर छोडे और घीके पात्रको वेदीकी अग्निमें रखकर गरम करे और अग्निहीमें रक्खे हुए घीके ऊपर एक कुशा अथवा किसी एक खरको जलाय दाहिनी ओरसे घुमाकर अग्निमें छोड देवे फिर स्रुवाको अग्निमें तीन वार तपाकर संमार्जन नामके पांच कुशोंके आगेसे स्रुवाके आगेको व कुशोंके बीचसे स्रुवाके बीचको कुशोंके नीचेसे स्रुवाके नीचेको पोंछकर प्रणीताके जलसे सेचन कर अग्निमें तीन वार तपाय उसको दक्षिणकी ओर रख देवे ।

ततः आज्यमग्नेरवतार्य त्रिः प्रोक्षणीवदुत्पूयावेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरस्य पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम् तत उत्थायोपयमनकुशान् वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीं घृताक्तास्तिस्रः समिधोऽग्नौ प्रक्षिपेत् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फिर घीको अग्निसे उतारकर उसमेंसे मैलको निकाल डाले और जैसा प्रोक्षणीपात्र बना है उसी अनुसार घीको हिलावे फिर उपयमन नामके सातों कुशोंको वायें हाथमें लेके अग्निको देख ब्रह्माको मनमें ध्याय खडे हो तीनों ढांककी समिधायें एक एक करके घीमें डुबोय चुपचाप अग्निमें हुत देवे।

पुनरुपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निमुदक्संस्थं पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय प्रोक्षणीपात्रं विसर्जयेत् । ततः पातितदक्षिणजानुर्ब्रह्मणान्वारब्धः समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहुयात । तत्र तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितघृतशेषस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ॥

फिर बैठकर कुशोंसहित प्रोक्षणीके जलको प्रदक्षिणक्रमसे ईशानकोणसे लेके दक्षिणदिशातक अग्निके सब ओर सेचन करे अर्थात् प्रोक्षणीपात्रका सब जल पर्युक्षणमें गिरा देवे और प्रणीतापात्रमें दोनों पवित्र रखकर प्रोक्षणीपात्रका विसर्जन करे तदनन्तर दाहिनी जांघको झुकाकर अर्थात् दाहिने घोटूको भूमिपर टेकके ब्रह्मासे अन्वारब्ध हुआ ब्रह्मचारी अथवा वेदोक्त वचन व मंत्रोंसे प्रज्वलित अग्निमें घीकी आहुति देवे वहां आहुति देनेके अनन्तर स्रुवामें जो घृतबिन्दु बचे उसको प्रोक्षणीपात्रमें डालता जावे ।

प्रजापतिका ध्यान धर पूर्वाघारकी आहुति चुपचाप देवे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्याग सबका ब्रह्मचारी स्वयं बोलता जाय। दो आहुति अघारकी, दो आज्यभागकी, तीन महाव्याहृतियोंकी और पांच सर्वप्रायश्चित्तकी तथा दो प्राजापत्य और स्विष्टकृतकी ये सब मिलाय १४ आहुतियां त्यागोंसहित देवे, फिर संस्रव प्राशन करे। यदि ब्रह्मचारीको ठीक ठीक मंत्र और विनियोग न आता हो तो आचार्य आदि कोई प्रतिनिधि होकर होमादि करे तहां पहले गणेशादिककी पूजाके निमित्त संकल्प करे।

ॐ तत्सदद्येत्यादि० अस्योपनयनकर्मणः निर्विघ्नपरिसमाप्त्यर्थं गणेशवरुणगौरीणां पूजनमहं करिष्ये॥

यह संकल्प करके गणेश गौरी वरुणकी पूजा करे। आगे हवन कहते हैं तहां दो आहुति अग्निके दक्षिण ओर छोडे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम। इति मनसा। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय न मम। इत्याघारौ॥

फिर अग्निके उत्तर आहुति देवे तब यह पढे।

ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम। इत्याज्यभागौ॥

फिर अग्निके बीचमें आहुतियां छोडे।

ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम। एता महाव्याहृतयः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फिर आचमनीसे जल लेके भूमिपर छोडे और विनियोग पढे। जहां २ विनियोग है वहां २ जल छोडना ।

ॐ त्वन्नोऽग्न इति वामदेव ऋषिः अग्नीवरुणौ देवता त्रिष्टुप्छन्दः प्रायश्चित्तहोमे विनियोगः ॥

फिर आहुति देवे तब यह पढे ।

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाꣳसिप्रमुमुग्धस्मत् स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥

एवं आगे लिखी आहुतियां देवे और विनियोग पढ पढ भूमिपर जल छोडता जाय ।

ॐ तत्त्वन्नोऽग्न इति वामदेव ऋषिः अग्नीवरुणौ देवते त्रिष्टुप्छन्दः होमे विनियोगः । ॐ सत्वन्नो अग्ने वमोभवोतीनेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अवयक्ष्वनो वरुणꣳरराणो वीहिमृडीकꣳसुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥ अयाश्चाग्न इति वामदेवऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः होमे विनियोगः । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्त्वमित्त्वमयाअसि । अयानो यज्ञं वहास्यययानोधेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये ॥ ॐ येतेशतमिति वामदेव ऋषिः वरुणः सविता विष्णुर्विश्वे मरुतः स्वर्का देवताः त्रिष्टुप्छन्दः होमे विनियोगः । ॐ येते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाशा वितता महान्तस्तेभिर्नो अद्य सवितोतविष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्का स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः॥ उदुत्तममिति शुनःशेफ ऋषिर्वरुणो देवता त्रिष्टुप्छन्दः पाशान्मोके विनियोगः। ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यम ९ श्रथाय अथा वयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणादितये॥ एताः सर्वप्रायश्चित्ताहुतयः॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते॥

फिर प्रोक्षणीपात्रमें छोडे हुए घीको देहमें लगा लेवे और आचमन कर हाथमें जलाक्षत सुपारी पान दक्षिणा व चावलोंसे भरे हुए पूर्णपात्रको लेके ब्रह्माको देवे। पहले यह पढे।

ॐ तत्सदद्येत्यादि० कृतैतदुपनयनकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठासिद्धयर्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे॥

फिर पूर्णपात्रको लेके ब्रह्मा 'ॐ स्वस्त्यस्तु' यह कहे। अनन्तर पवित्र नामके कुशोंसे प्रणीतापात्रके जलको आचार्य कुमारके शिरपर छिरके और यह पढे।

ॐ सुमित्रियान आप ओषधयः सन्तु॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फिर पूर्व उत्तरके बीचमें प्रणीतापात्रको औंधा कर रख देवे तव यह पढे।

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः॥

फिर पवित्रोंको बिछाये हुए कुशोंमें मिला देवे और जिस क्रमसे कुश बिछाये थे उसी क्रमसे पवित्रोंसहित उठाकर कुशोंमें घी लगाय हाथोंहीसे कुशोंका होम कर देवे और यह पढे।

ॐ देवा गातु विदो गातुं वित्त्वागातुमितमनसस्पत इमं देवयज्ञ ꣳ स्वाहावातेधाः स्वाहा। इदं वाताय न मम॥

अनन्तर आचार्य कुमारको यह शिक्षा करे। ॐ ब्रह्मचार्यसि–तुम ब्रह्मचारी हो अर्थात् तुमने ब्रह्मचर्य धारण किया। तब कुमार यह कहे। ॐ भवामि–मैं ब्रह्मचारी हूं।

फिर आचार्य कहे कि। ॐ आपोशान–तुम आपोशानक्रियासे भोजन करना। आपोशानक्रियासे अन्नभक्षणकी यह रीति है कि भोजनके समय पहले अन्नके पात्रको जलसे पवित्र करना और यह पढना। अमृतोपस्तरणमसि। फिर तीन ग्रास नीचे लिखे मंत्रको पढके पृथ्वीपर रखना। ॐ भूपतये स्वाहा। ॐ भुवनपतये स्वाहा। ॐ भूतानां पतये स्वाहा। फिर जल छोडकर घी मिले हुए अन्नकी पांच

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आहुति मुखमें डालनी तब यह पांच मंत्र पढना। ॐ प्राणाय स्वाहा १। ॐ अपानाय स्वाहा २। ॐ उदानाय स्वाहा ३। ॐ व्यानाय स्वाहा ४। ॐ समानाय स्वाहा ५। फिर मौन हो यथारुचि भोजन करके हाथमें जल लेके पृथ्वीपर छोड देवे और यह पढे। ॐ अमृतापिधानमसि। यही आपोशानक्रिया है।

तब कुमार यह उत्तर देवे। ॐ अशानि—ऐसाही करूंगा। फिर आचार्य बालकसे यह कहे। कि। ॐ कर्म कुरु—तुम कर्म करनेके अधिकारी हुए हो सो स्नान सन्ध्योपासनादि अपना शास्त्रोक्त कर्म करो। तब बालक यह उत्तर देवे कि ॐ करवाणि—मैं कर्म करूंगा। फिर आचार्य यह शिक्षा करे कि। ॐ मादिवा सुषुस्व—दिनके समय शयन नहीं करना। तब कुमार कहे। ॐ न स्वपामि—नहीं सोऊंगा। फिर आचार्य कहे। ॐ वाचं यच्छ—मिथ्या बोलनेसे वाणीको रोकना अथवा उचित समयमें मौन धरना। तब कुमार करे। ॐ यच्छामि—वाणीको रोकूंगा। फिर आचार्य कहे। ॐ समिधमाधेहि—नित्य समिधादान करना। तब बालक कहे। ॐ आदधामि—नित्य समिधा लाऊंगा। फिर कुमार आचार्यका बायां चरण बायें हाथसे और दाहिने हाथसे दाहिना चरण स्पर्श करे और गायत्री मंत्र सुननेकी अभिलाषासे आचार्यकी ओर देखे। आचार्य कुमारकी ओर देखे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और घंटा शंख आदि शब्दको निवारण करके गायत्रीमंत्र सुनानेके निमित्त वस्त्र लेके आधा वस्त्र अपने शिरपर और आधा वस्त्र कुमारके शिरपर डालके तीन वारमें पूर्ण गायत्री मंत्र सुनावे तहां पहले हाथमें जल लेके भूमिपर छोडना और यह पढना ।

ॐ भूर्भुवः स्वः इति प्रजापति ऋषिः अग्निवायु सूर्यो देवता गायत्र्युष्णिगनुष्टुछन्दा ंसि गायत्रीदाने विनियोगः ॥

नीचे लिखे अनुसार गायत्री सुनाना और कुमारसेभी कहाते जाना । प्रथम वार ॐ भूर्भुः स्वः तत्सवितुर्वरे-ण्यम् । ऐसे शुद्ध उच्चारण कराय द्वितीयवार ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्य भर्गोदेवस्य धीमहि । फिर तीसरी वार ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीम-हि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अथ गायत्रीमंत्रव्याख्या ।

तत् (यस्य) तं भर्ग (तेजः) वयं धीमहि चिंत-यामः किंभूतस्य तस्य सवितुः (सर्वभूतानां प्रसवि-तुः) पुनः किंभूतस्य देवस्य (दीप्तिक्रीडायुक्तस्य) यो भर्गो नोऽस्माकं धियो (बुद्धीर्धर्मार्थकाममोक्षेषु) प्रचो-दयात् (नियोजयति) पुनः किंभूतं वरेण्यम् (वरणीयं जन्ममृत्युदुःखादिनाशाय ध्यानेनोपासनीयमित्यर्थः)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुनः किंभूतोऽसौ भर्गः भूर्भुवःस्वः (भूर्लोकान्तरिक्ष लोकस्वर्गलोकस्वरूपः) ॥

तिस ब्रह्मके तेजका हम ध्यान करते हैं । कैसा ब्रह्म है कि सब जीवोंका उत्पन्न करनेवाला है । फिर ब्रह्म कैसा है कि देव है अर्थात् प्रकाशवान् है जो तेज हम लोगोंकी बुद्धिको धर्म अर्थ काम मोक्षमें युक्त करता है । फिर कैसा है तेज कि भूलोक अन्तरिक्षलोक और स्वर्गलोकस्वरूप है । गायत्री मंत्रके आदिमें जो ओंकार है सो ओम् यह परमात्माका मुख्य नाम है ।

गायत्रीमंत्र सुननेके उपरान्त शिरपर रक्खे हुए उस नवीन वस्त्रको दक्षिणासहित लेके कुमार आचार्यको देवे और प्रणाम करे फिर विनियोग करे ।

ॐ अग्ने सुश्रुव इत्यादीनां ब्रह्मा ऋषिः अग्निर्देवता यजूंषि अग्निसमिन्धने विनियोगः ॥

फिर बिनुआ कंडे घीमें डुबो डुबोकर अग्निमें छोडे और यह पढे ।

ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु १ । ॐ यथात्वमग्ने सुश्रवः सुश्रव असि २ । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु ३ । ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि ४ । ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयास ॐ स्वाहा ॥ ५ ॥

यही समिधादान है जो पूर्व कह आये हैं कि नित्य समिधादान करना । जब अग्नि प्रदीप्त हो जावे तब कुमार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दाहिने हाथमें जल लेके पूर्व व दक्षिणके वीचसे दाहिनी ओर अग्निके चौगिर्द घुमाकर छोड देवे । फिर आचमनीसे जल लेके भूमिपर छोडे ।

ॐ अग्नय इति प्रजापति ऋपिः आकृतिः छन्दः समिद्देवता समिधादाने विनियोगः ॥

फिर कुमार ढाककी एक समिधा लेके घीमें डुवोय कानमें लगाय अग्निमें छोड देवे तीन समिधा छोडे । कानमें लगाते समय यह पढे ।

ॐ अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यस एवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीव पुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भूयास ँ स्वाहा ॥

इस प्रकार तीन समिधाओंको पृथक् पृथक् हुतकर वैठ जावे और विनुआ कंडेको घीमें डुवो डुवोकर एक एक मंत्रको पढकर अग्निमें छोडे ।

ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु १ । ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रव सुश्रवा असि २ । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु ३ । ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि ४ । ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयास ँ स्वाहा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनन्तर नीचे लिखे हुए मंत्रको पढकर भूमिपर जल छोडे।

ॐ तनूपा अग्नय इत्यादीनां बृहद्देवता ऋषयःअग्नि-र्देवता यजुर्मुखमार्जने विनियोगः ॥

फिर प्रज्वलित अग्निमें दोनों हाथोंको तपाय तपाय फिर एक एक मंत्रसे मुखपर फेरे ।

ॐ तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि १ । ॐ आयुर्दा अग्नेस्यायुर्मे देहि २ । ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि ३ । ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण ४ । ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु ५ । ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु ६ । ॐ मेधां मेऽश्विनौ देवा बाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥ ७ ॥

फिर बालक आगे लिखे मंत्रको पढकर अपना सब अंग छुवे । ॐ अंगानि च म आप्यायताम् । फिर मुख छुवे तब यह पढे । ॐ वाक् च म आप्यायताम् । नासिका छुवे तब यह पढे । ॐ प्राणश्च म आप्यायताम् । फिर नेत्रोंको छुवे तब यह पढे । ॐ चक्षुश्च म आप्यायताम् । कानोंको छुवे तब यह पढे । ॐ श्रोत्रं च म आप्यायताम । फिर भुजाओंको छुवे तब यह पढे । ॐयशो बलं च म अप्यायताम्। फिर आचमनीसे जल लेके भूमिपर छोडे तब यह पडे । त्र्यायुषमिति नारायण ऋषिरुष्णिक् छन्दः अग्नि-र्देवता त्र्यायुषकरणे विनियोगः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनन्तर हवनकी अग्निमेंसे स्रुवासे भस्म लेके दाहिने हाथकी छँगुनियाके पासकी अँगुली (अनामिका) से मस्तकपर भस्म लगावे और यह पढे । ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः । फिर ग्रीवामें भस्म लगावे तब यह पढे । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् । फिर दाहिनी भुजामें लगावे तब यह पढे । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् । फिर हृदयमें लगावे तब यह पढे । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ॥

फिर दोनों हाथ जोड भूमिपर शिर झुकाय कुमार अग्निको प्रणाम करे पहले असुकके स्थानमें अपना गोत्र दूसरे असुकके स्थानमें अपना नाम उच्चारण करे ।

अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माहं भो अग्ने त्वामभिवादये । इसी प्रकार आचार्यको प्रमाण करे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माहं भो भवन्तमभिवादये । तब आचार्य आशीर्वाद देवे कि । आयुष्मान् विद्यावान् भव सौम्य । एवं ब्रह्मा आदि सब ब्राह्मणोंको कुमार प्रणाम करे और वे सब कुमारको आशीर्वाद देवें ।

फिर कुमारकी माता अपने पतिके समीप दक्षिणभागमें बैठ गांठ जोड भीखीका सब सामान मँगाय संकल्प कर चार वा पांच ब्राह्मणोंका वरण कर बालकके चरण प्रक्षालन कर रोचना लगाय अक्षत चिपकाय फूलमाला पहिराय देवे अनन्तर कुमार अपने दोनों हाथोंमें तांबेका अथवा पत्तोंका पात्र लेके खडा होवे और यह कहे । ॐ भवति मातर्भिक्षां मे देहि ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तब माता खडी होके पतिके हाथमेंके सूपमेंसे दक्षिणा लेके कुमारके पात्रमें छोड देवे तब बालक यह कहे । ॐ स्वस्ति । अनन्तर उस सूपकोभी खंभहीमें लगाकर रख देवे । दूसरा जो कोई भिक्षा देवे तो कुमार 'भवति भिक्षां देहि स्वस्ति' ऐसा कहे ।

यहां जो पात्रसमेत भिक्षा हो तो 'करं विहाय स्वस्ति' ऐसा कहे । और जो पात्रमेंका पदार्थही भिक्षामें हो तो 'करपात्रं विहाय स्वस्ति' ऐसा कहे ।

प्रायः यहां यह रीति है कि कुमारभी बैठा रहता है और माताभी बैठी रहती है और भीखीका सामान माता पिता अपने हाथमें लेते हैं तब कुमारभी अपना हाथ उसमें लगाता है और यह कहता है अथवा पंडित कहलवा देता है कि । ॐ भवति मातर्भिक्षां मे देहि करं विहाय स्वस्ति । दूसरे लोगोंके भिक्षामें 'करपात्रं विहाय स्वस्ति' ऐसा कहा जाता है। यहां विशेषता यह है कि ब्राह्मण ब्रह्मचारी हो तो 'भवति भिक्षां देहि' ऐसा कहे। यदि क्षत्रिय हो तो 'भिक्षां भवति देहि' वैश्य हो तो 'भिक्षां देहि भवति' तीनों वर्णोंमें क्रमसे आदि मध्य और अन्तमें भवति शब्द उच्चारण करे । कहीं ऐसीभी रीति है कि यदि ब्राह्मणकुमार पुरुषसे भिक्षा मांगे तो 'भवान् भिक्षां ददातु' स्त्रीसे भिक्षा मांगे तो 'भवति भिक्षां ददातु' ऐसा कहे और यदि क्षत्रियकुमार पुरुषसे भिक्षा मांगे तो 'भिक्षां भवान् ददातु' स्त्रीसे भिक्षा मांगे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तो 'भिक्षां भवती ददातु' वैश्यकुमार पुरुषसे भिक्षा मांगे तो 'भिक्षां ददातु भवान्' स्त्रीसे मांगे तो 'भिक्ष ददातु भवती' भिक्षा मिलने उपरात उस भिक्षाको कुमार आचार्यके आगे रक्खे और यह कहे। इयं भिक्षा मया लब्धा ॥

फिर आचार्य सुपारी, पान, फूल, चन्दन, घी स्रुवामें रखके बालक अपने दाहिने हाथमें लेके पूर्णाहुति देवे तब यह पढे ।

ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निं कवि ँ सम्राजमतिथिं जनानामासन्नापात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा इदमग्नये ॥

तदनन्तर स्रुवासे भस्म लेके दाहिने हाथकी छँगुनियाके पासकी अंगुली (अनामिका) से मस्तकपर भस्म लगावे तब यह पढे। ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः। फिर ग्रीवामें भस्म लगावे तब यह पढे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् । फिर दक्षिणभुजामें लगावे तब यह पढे। ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् । फिर हृदयमें भस्म लगावे तब यह पढे। ॐ तत्ते अस्तु त्र्यायुषम् ॥

अब ब्रह्मचारीके नियम लिखते हैं।

अथ क्षारलवणमधुमांसादिनिवृत्तिः उद्धृतजलस्नानदंडकृष्णाजिनधारणवृक्षारोहणविषमभूमिलंघननग्नस्त्रीनिरीक्षणस्त्रीसंभोगव्यसनव्यावृत्तिरूपाब्रह्मचारिणो नियमाः । तद्दिने ब्रह्मचारी वाग्यतोहःशेषं स्थितं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गमयेत् ततः सायंसन्ध्यां कृत्वा तस्मिन्नेवाग्नौ पूर्ववत् पर्युक्षणपरिसमूहनं कृत्वा वाचं विसृजेत् । परिसमूहनान्ते शुष्कानि पिद्धेतरेन्धनस्याग्नौ प्रक्षेपः ततः सन्ध्यामुपास्य प्रतिदिनं सायं प्रातरपि ब्रह्मचारिणा कर्तव्या ॥

अनन्तर खारी लवण शहत और मांस आदि ब्रह्मचारी नहीं खावे और जलको अलग निकालकर स्नान नहीं करे और दंड मृगचर्मको धारण करना, वृक्षपर चढना ऊंची नीची भूमिमें कूदना, नग्न स्त्रीका देखना, स्त्रीसंग, जुवां आदि व्यसन इन सबको ब्रह्मचारी त्याग देवे। ये ब्रह्मचारीके नियम हैं । उसी दिन ब्रह्मचारी मौन रहकर शेष दिन व्यतीत करे तदनन्तर सायंकालकी संध्या करके उसी अग्निमें पहलेकी नाई पर्युक्षण और परिसमूहन करके मौन त्यागकर बोले। फिर परिसमूहनके अंतमें सूखे उत्तम ईंधनको अग्निमें छोडे तिस पीछे संध्योपासन करे प्रातःकाल और सायंकालकी संध्या प्रतिदिन करे।

तथा मनुः । वर्जयेन्मधु मांसं च गन्धं माल्यं रसान् स्त्रियः ॥ शुक्तानि यानि सर्वाणि प्राणिनां चैव हिंसनम् ॥ १ ॥ अभ्यङ्गमञ्जनं चाक्ष्णोरुपानच्छत्रधारणम् ॥ कामं क्रोधं च लोभं च नर्तनं गीतवादनम् ॥ २ ॥ द्यूतं च जनवादं च परिवादं तथाऽनृतम् ॥ स्त्रीणां च प्रेक्षणालम्भमुपघातं परस्य च ॥ ३ ॥ एकः शयीत सर्वत्र न रेतः स्कन्दयेत्क्वचित् ॥ कामाद्धि स्कन्दयन् रेतो हिनस्ति व्रतमात्मनः ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनुस्मृतिका वचन है कि, ब्रह्मचारी शहत और मांस नहीं खाय, इतर आदि सुगन्ध नहीं लगावे, फूल आदि माला नहीं पहिरे, लवण आदि रस नहीं खावे, स्त्रियोंका संग नहीं करे, बासी अन्न आदि नहीं खावे, जीवजन्तुओंको नहीं मारे ॥ १ ॥ शरीरमें तेल आदि नहीं लगावे, नेत्रोंमें अंजन नहीं लगावे, जूता और छाता नहीं धारण करे और काम, क्रोध, लोभ, नाच, गीत, बाजा ॥ २ ॥ जुवां, लडाई, झगडा, झूठ इनको त्याग करे और स्त्रियोंको देखना, स्पर्श करना, किसीको मारना इन कामोंको न करे ॥ ३ ॥ अकेलाही सर्वत्र सोवे, वीर्यपात न होने देवे । यदि ब्रह्मचारी कामवेगसे वीर्यपात करे तो ब्रह्मचारीका व्रतभंग हो जाता है जबतक सामर्थ्य हो तबतक ब्रह्मचर्य धारण करे ॥ ४ ॥

अनन्तर ब्रह्मचारी दोनों हाथोंमें फूल लेके खंभ कलश व गणेशगौरीपर चढावे और यह पढे ।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् । तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ १ ॥ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वै श्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥ २ ॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥

यहां एकही साथ तीनों वेदियों (उपनयन, वेदारंभ, समावर्तन) के होनेका प्रचार है इस कारण अन्तमें देववि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर्जन लिखेंगे । मुख्य बात तो यह है कि उपनयनसंस्कार होने उपरान्त ब्रह्मचारी गुरुकुलमें जाकर वेदाध्ययन करे फिर वेदारम्भनामक दूसरी वेदी बनाय वेदारंभ करे, वहांसे आकर शुभ मुहूर्तमें समावर्तनसंस्कार करे । क्योंकि ये तीनों संस्कार पृथक् पृथक् हैं और इनकी कर्तव्यताभी पृथक् पृथक् है । परंतु एतद्देशमें सर्वत्र ऐसे दीखनेमें आता है कि तीनों वेदी एकही समयमें उनकी कृत्यसहित समाप्त की जाती हैं ।

इत्युपनयनसंस्कारः समाप्तः ।

अथ वेदारम्भसंस्कारः ।

अथ वेदारंभसंस्कार लिखते हैं । यज्ञोपवीतहीके दिन अथवा उससे तीसरे दिन नित्य कर्मसे निवृत्त होके आचार्य मंडपके समीप आवे और ब्रह्मचारीभी नित्यक्रियासे निवृत्त होके आवे और आचार्यके समीप पूर्वमुख बैठ आचमन कर आचार्यका वरण उपनयनसंस्कारमें कहे अनुसार करे और आचार्य संकल्प करे । पहले अमुकके स्थानमें ब्रह्मचारीका नाम और दूसरे अमुकके स्थानमें वेदका नाम लेवे कि जिस वेदमें आरंभ कराना हो ।

ॐ तत्सदद्येत्यादि० अमुकबटो अमुकवेदारम्भकर्माहं करिष्ये ॥

यह ब्रह्मचारी और वेदका नाम अमुकके स्थानमें लेवे जो वेद पढाना हो अथवा जो वेद ब्रह्मचारीके गोत्रमें होवे उस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेदका नाम उच्चारण करना योग्य है ।

तदनन्तर एक तांबेके पात्रमें अथवा एक दोनकीमें चावल दक्षिणा धरकर दाहिने हाथमें अक्षत ले उसी दोनकीमें छोडे और पढे ।

प्रजापतिमिन्द्रमग्निं सोममग्निपृथिवीमग्निब्रह्माणं छन्दांस्यन्तरिक्षं वायुं ब्रह्माणं छन्दांसि दिवं सूर्यं ब्रह्माणं छन्दांसि दिशश्चन्द्रमसं ब्रह्माणं छन्दांसि प्रजापतिं देवान् ऋषीं श्रद्धां मेधां सदसस्पतिमनुमतिमग्निं वायुं सूर्यं अग्नीवरुणावग्निं वरुणं सवितारं विष्णुं विश्वान्देवान् मरुतः स्वर्कान्वरुणं प्रजापतिमग्निं स्विष्टकृतमाज्येनाहं यक्ष्ये ॥

अनन्तर पंचभूसंस्कारमें कहे अनुसार पंचभूसंस्कार ब्रह्माका वरण और कुशकण्डिका व गणेश गौरी वरुणकी पूजा करे तिस पीछे स्रुवासे घी लेके अग्निमें छोडे तब यह पढे ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये । ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय ॥

फिर स्रुवासे घी लेके अग्निमें आहुति देवे और स्रुवाको लौटाते समय बचे हुए घीको प्रोक्षणी पात्रमें छोडता जाय ।

ॐ पृथिव्यै स्वाहा इदं पृथिव्यै । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः । ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदम-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न्तरिक्षाय । ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे । ॐ दिवे स्वाहा इदं दिवे । ॐ सूर्याय स्वाहा इदं सूर्याय । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये । ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्यः । ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदं ऋषिभ्यः ॥ ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै । ॐ मेधायै स्वाहा इदं मेधायै । ॐ सदसस्पतये स्वाहा इदं सदसस्पतये । ॐ अनुमतये स्वाहा इदमनुमतये । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय ॥

फिर हाथमें जल लेके भूमिपर छोडे और यह पढे ।

ॐ त्वन्नो अग्न इति वामदेव ऋषिः अग्नीवरुणौ देवते त्रिष्टुप्छन्दः होमे विनियोगः । फिर घीकी आहुति देवे ।

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्टाः यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ꣳ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥

फिर विनियोग पढकर जल और मंत्र पढकर अग्निमें आहुति छोडे विनियोग और मंत्र आगे लिखते हैं ।

ॐ सत्वन्नो अग्न इति वामदेव ऋषिः अग्नीवरुणौ देवते त्रिष्टुप्छन्दो होमे मिनियोगः । ॐ सत्वन्नो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्नेऽत्रमोभवोतीनेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ अवय- क्ष्वनो वरुण ꣳ रराणो वीहि मृडीक ꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ॐ अया- श्चाग्न इति वामदेव ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः होमे विनियोगः । ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्त्वमित्त्वमया असि अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ꣳ स्वाहा इदमग्नये न मम ॥ ॐ येतेशतमिति वामदेवऋषिः वरुणः सविता विष्णुर्विश्वेमरुतः स्वर्का- देवता त्रिष्टुप्छन्दः होमे विनियोगः । ॐ येते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तस्ते- भिर्नो अद्यसवितोतविष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्का स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ॐ उदुत्तममिति शुनः- शेफ ऋषिर्वरुणो देवता त्रिष्टुप्छन्दः पाशान्मोके विनि- योगः ॥ ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विम- ध्यम ꣳ श्रथाय अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदि- तये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय न मम ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते ॥

फिर कुमार प्रोक्षणीपात्रके घीको लेके अपने सब शरीर- पर लगावे और चावल व दक्षिणासमेत पूर्णपात्र भरकर ब्रह्माको यह संकल्प पढकर देवे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ॐ तत्सद्येत्यादि० कृतैतद्वेदारम्भहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थं इदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

फिर ब्रह्मा पूर्णपात्र लेके 'स्वस्ति' ऐसा कहे । अनन्तर पवित्र कुशोंसे जल लेकर आचार्य कुमारके शिरपर छिरके और यह पढे ।

ॐ सुमित्रियान आप ओषधयः सन्तु ॥

फिर प्रणीतापात्रको ईशानदिशामें उलटकर रख देवे तब यह पढे ।

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ॥

फिर जिस प्रकार कुश बिछाये गये थे उसी प्रकार उठाय घीमें डुवोय अग्निमें छोडे और यह पढे ।

ॐ देवा गातु विदो गातुं वित्वा गातुमितमनसस्पत इमं देवयज्ञ ँ वातेधाः स्वाहा ॥

फिर आचार्य कुमारको वेदोंकी अभीष्ट शाखा स्वरोंसहित पढावे तहां स्वस्तिवाचन अवश्य पढावे । स्वस्तिवाचनमेंके छः मंत्र आगे लिखते हैं ।

हरिः ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ ॐ पयः पृथिव्याम्प-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ २ ॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ ३ ॥ ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ ४ ॥ ॐ विश्वानि देवसवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रन्तन्न आसुव ॥ ५ ॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ ६ ॥ ॐ शान्तिः शांतिः सुशांतिर्भवतु सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ॥

फिर बालक एक नारियल व दक्षिणा आदि लेके आचार्यको देवे और प्रणाम करे तथा अन्यभी आये हुए ब्राह्मणोंको दक्षिणा देके प्रणाम करे । तत्पश्चात् कुमार फल फूल व घीको स्रुवामें रखकर खडा होवे और प्रज्वलित अग्निमें पूर्णाहुति छोडे तब यह पढे ।

ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निं कवि ꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फिर बैठकर स्रुवामें अग्निसे भस्मको लेकर आचार्य कुमारके मस्तकपर लगावे तब यह पढे । त्र्यायुषं जमदग्नेः । ग्रीवामें लगावे तब यह पढे । कश्यपस्य त्र्यायुषम् । फिर दक्षिण बाहुमें लगावे तब यह पढे । यद्देवेषु त्र्यायुषम् । फिर हृदयमें लगावे तब यह पढे । तत्तेस्तु त्र्यायुषम ॥

फिर आचार्य कुमारको विधिसहित शौचाचारकी शिक्षा देवे तहां कुछ शिक्षा लिखते हैं ।

दिवासन्ध्यासु कर्णस्थब्रह्मसूत्र उदङ्मुखः ॥
कुर्यान्मूत्रपुरीषे तु रात्रौ चेद्दक्षिणामुखः ॥ १ ॥

दिनके समय दाहिने कानपर जनेऊको चढाय उत्तरको और रात्रिको दक्षिसमुख करके दीर्घशंका (दिशा) लघुशंका (मूत्री) करने बैठना ॥ १ ॥

छायायामन्धकारे वा रात्रौ वा यदि वा दिवा ॥
यथासुखमुखः कुर्यात्प्राणबाधाभयेषु च ॥ २ ॥

और छाया हो वा अंधेरा हो वा रात्रि हो अथवा दिन हो तो जहां अच्छा लगे वहां बैठना प्राणबाधा जान पडे तो जहां सुख समझे वहां बैठ जावे ॥ २ ॥

एका लिंगे गुदे तिस्रो मृदो वामकरे दश ॥
उभयोः सप्त दातव्या तिस्रस्तिस्रस्तु पादयोः ॥ ३ ॥

दीर्घशंका होने उपरान्त एक वार लिंगमें तीन वार गुदामें मिट्टी लगाना फिर वायें हाथमें दश वार, दोनों हाथोंमें सात

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वार मिट्टी लगाकर धोना और तीन तीन वार दोनों पावोंमें मिट्टी लगाना ॥ ३ ॥

मूत्रे पुरीषे भुंजाने रेतः प्रस्रवणे तथा ॥
चतुरष्टद्विषड्द्वयष्टगण्डूषैः शुद्धिमाप्नुयात् ॥ ४ ॥

लघुशंकामें चार, दिशामें आठ, भोजनमें बारह व वीर्य स्खलित हो जानेमें सोलह कुल्ली करनेसे शुद्धि होती है ॥ ४ ॥

इति वेदारंभ समाप्तः ।

अथ समावर्तनसंस्कारः ।

तत्र ब्रह्मचारी साङ्गमेकं द्वौ सर्वान् वा वेदान्नियमेनाधीत्य समावर्तनं चिकीर्षुर्गुरुमाचार्यमर्थदानेन सम्पूज्याचार्येणानुज्ञातः शुभदिने समावर्तनं कुर्यात् ॥

अब समावर्तनसंस्कार लिखते हैं। तहां ब्रह्मचारी एक वा दो वेद सांगोपांग विधिपूर्वक पढकर समावर्तन करनेकी इच्छासे पहले धन वस्त्र आदि पदार्थ देके आचार्यका पूजन करे फिर आचार्यकी आज्ञासे शुभ दिन समावर्तन करे ।

जिस दिन समावर्तन संस्कार करना है उस दिन कुमारका पिता स्नानादि नित्यकृत्य करके मातृपूजा और आभ्युदयिक श्राद्ध करे फिर आचार्यको कुमार प्रणाम कर यह कहे कि । भो आचार्य ! अहं स्नास्ये–हे आचार्य ! मैं स्नान करूंगा । तब आचार्य यह कहे कि । भो बेटो ! स्नाहि–हे ब्रह्मचारी ! स्नान करो ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फिर कुमार स्नानादि नित्यकर्म करके मंडपके नीचे आय आसन बिछाकर पूर्वमुख बैठे और आचार्यका वरण पूर्वोक्त रीतिसे करे फिर आचार्य अमुकके स्थानमें ब्रह्मचारीका नाम लेके यह संकल्प करे ।

ॐ तत्सदद्येत्यादि० अस्यामुकब्रह्मचारिणो गृहस्थाश्रमाद्याश्रमान्तरप्राप्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं समावर्तनाख्यं कर्माहं करिष्ये ॥

फिर तांबेके पात्रमें अथवा दोनकीमें चावल व दक्षिणा रखकर आचार्य दाहिने हाथमें अक्षतोंको लेके दोनकीमें छोडे और यह पढे ।

प्रजापतिमिन्द्रमग्निसोमं पृथिवीमग्निब्रह्माणं छन्दांसि अन्तरिक्षं वायुं ब्रह्माणं छन्दांसि दिवं सूर्यं ब्रह्माणं छन्दा ँ सि दिवचन्द्रमसं ब्रह्माणं छन्दांसि प्रजापतीन् देवान् ऋषीन् श्रद्धां मेधां सदसस्पतिमनुमतिमग्नि वायुं सूर्यं अग्नीवरुणावग्नि वरुणं सवितारं विष्णुं विश्वान्मरुतः॥ स्वर्कान् वरुणं प्रजापतिमग्नि स्विष्टकृतमाज्येनाहं यक्ष्ये ॥

फिर उपनयन संस्कारमें कहे अनुसार पंचभूसंस्कार कर कांसेके पात्रमें अग्नि मँगाय स्थापन करे फिर ब्रह्माका वरण कराय कुशकंडिका करे । अनन्तर तांबे वा पीतलके आठ कलश जलसे भरे हुए रखकर नीचे कुशा रक्खे और कलशोंके भीतर पान, सुपारी, चन्दन, अक्षत, फूल, आंबके पत्ते, कुशा, दक्षिणा डालकर दक्षिणसे उत्तरतक पांति करके धरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और कलशोंके आगे कुश बिछाय गणेशादिककी पूजा करे और स्रुवासे घी लेके अग्निमें छोडे और यह पडे ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम । इति मनसा ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय । इत्याघारौ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम । इत्याज्यभागौ ॥

फिर घीकी आहुति स्रुवासे देवे और स्रुवाको लौटते समय बचे हुए घीको प्रोक्षणीपात्रमें छोडता जाय ।

ॐ पृथिव्यै स्वाहा इदं पृथिव्यै । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः । ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदमन्तरिक्षाय । ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे । ॐ दिवे स्वाहा इदं दिवे । ॐ सूर्याय स्वाहा इदं सूर्याय । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये । ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्यः । ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदं ऋषिभ्यः । ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै । ॐ मेधायै स्वाहा इदं मेधायै । ॐ सदसस्पतये स्वाहा इदं सदसस्पतये ॐ अनुमतये स्वाहा इदमनुमतये । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय ॥

फिर विनियोग पढकर भूमिपर जल छोडता जाय और मंत्र पढकर आहुतियोंको छोडे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ॐ त्वन्नो अग्न इति वामदेव ऋषिः अग्नीवरुणौ देवते त्रिष्टुप्छन्दः प्रायश्चित्तहोमे विनियोगः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ᳪ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥ ॐ सत्वन्नो अग्न इति वामदेव ऋषिः अग्नीवरुणौ देवते त्रिष्टुप्छन्दः होमे विनियोगः । ॐ सत्वन्नो अग्ने वमोभवोतीनेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ अवयक्ष्वनो वरुण ᳪ रराणो वीहिमृडीक ᳪ सुहवोन एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥ ॐ अयाश्चाग्न इति वामदेव ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः होमे विनियोगः । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्त्वमित्व मया असि अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ᳪ स्वाहा । इदमग्नये ॥ ॐ येतेशतमिति वामदेव ऋषिः वरुण सविता विष्णुर्विश्वे मरुतः स्वर्का देवता त्रिष्टुप्छन्दः होमे विनियोगः ॥ ॐ येते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तस्तेभिर्नो अद्यसवितोतविष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः ॥ ॐ उदुत्तममिति शुनः शेफ ऋषिर्वरुणो देवता त्रिष्टुप्छन्दः पाशान्मोके विनियोगः ॥ ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ᳪ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्राय । अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणायादितये । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते ॥

फिर प्रोक्षणीपात्रके घीको बालक अपने शरीरमें लगावे और आचमन कर ब्रह्माको पूर्णपात्र प्रदान करे । फिर आचार्य बालकके ऊपर पवित्र कुशोंसे प्रणीतापात्रके जलको छिड़के और यह पढे ।

ॐ सुमित्रियान आप ओषधयः सन्तु ॥

फिर प्रणीतापात्रको पूर्वोत्तरकी ओर उलटकर रख देवे तब यह पढे ।

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ॥

अनन्तर जिस प्रकार कुश बिछाये गये उसी प्रकार उठाय घीमें डुबोय अग्निमें हुत देवे और यह पढे ।

ॐ देवो गातु विदो गातुं विदित्वा गातुमिति मनसस्पत इमं देवयज्ञ ७ृं स्वाहा । वातेधाः स्वाहा ॥

अनन्तर आचमनीसे जल लेके भूमिपर छोडे और यह पढे ।

ॐ अग्ने सुश्रव इत्यादीनां ब्रह्माऋषिः अग्निर्देवता यजुःसन्धुक्षणे विनियोगः ॥

फिर ब्रह्मचारी बिनुआ कंडा हाथमें ले घीमें डुबोय पृथक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पृथक् पांच आहुति देवे और यह पांचो मंत्र पृथक् पृथक् पढे ।

ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु स्वाहा १ । ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवः असि स्वाहा २ । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु स्वाहा ३ । ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि स्वाहा ४ । ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयास ँ स्वाहा ॥ ५ ॥

फिर दाहिने हाथमें जल लेके अग्निमें दाहिनी ओरसे छोडे । फिर ब्रह्मचारी दाहिने हाथमें जल लेके दक्षिणावर्त घुमाय अग्निमें छोड देवे फिर भूमिपर जल छोडे ।

अग्नये इति प्रजापति ऋषिः समिद्देवता आकृतिछन्दः समिधादाने विनियोगः ॥

फिर अंगूठेसे छंगुनियांतककी ढांककी समिधा घीमें डुबोय दाहिने कानमें लगाय खडे होकर अग्निमें छोड देवे और यह पढे ।

ॐ अग्नये समिधामाहार्षं बृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यसे एवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिधे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भूयास ँस्वाहा ॥

इस प्रकार तीन समिधादान करके ब्रह्मचारी बैठ जावे और विनुआकंडा ले घीमें डुबोय आहुति छोडे और यह पढे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु १ । ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवः असि स्वाहा २ । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु स्वाहा ३ । ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि स्वाहा ४ । ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासं स्वाहा ॥ ५ ॥

फिर दाहिने हाथमें जल लेके अग्निमें दाहिनी ओरसे छोडे । और जल लेके भूमिपर छोडे और यह पढे ।

तनूपा अग्न इत्यादीनां बृहद्देवता ऋषयः अग्निर्देवता यजुर्मुखमार्जने विनियोगः ॥

अनन्तर ब्रह्मचारी अपने दोनों हाथ अग्निमें सेंक सेंककर एक एक मंत्र पढ पढ मुखभरमें लगावे ।

ॐ तनूपा अग्नेसि तन्वं मे पाहि । ॐ आयुर्दा अग्नेस्यायुर्मे देहि । ॐ वर्चोदा अग्नेसि वर्चो मे देहि । ॐ अग्ने यन्मे तन्वाऊनं तन्मे आपृण । ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु । ॐ मेधां मे सरस्वती आदधातु । ॐ मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥

फिर ब्रह्मचारी अपना दाहिना हाथ सब अंगोंमें लगावे और यह पढे । ॐ अंगानि च आप्यायताम् । फिर मुखपर हाथ लगावे तब यह पढे । ॐ वाक् च म आप्यायताम् । फिर नासिकापर हाथ लगावे तब यह पढे । ॐ प्राणश्च म आप्यायताम् । फिर नेत्रोंपर हाथ लगावे तब यह पढे । ॐ चक्षुश्च म आप्यायताम् । फिर कानोंपर हाथ लगावे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तब यह पढे । ॐ श्रोत्रं च म आप्यायताम् । फिर भुजाओंको स्पर्श करे तब यह पढे । ॐ यशो बलं च म आप्यायताम्। फिर भूमिपर जल छोडे तब यह पढे । त्र्यायुष-मिति नारायणऋषिरग्निर्देवता उष्णिक् छन्दः त्र्यायुषकरणे विनियोगः । फिर अग्निमें स्रुवाद्वारा भस्मको छंगुनियाके समीपवाली अंगुलीसे लेके मस्तकपर लगावे तब यह पढे । त्र्यायुषं जमदग्नेः । फिर ग्रीवामें लगावे तब यह पढे । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् । फिर दाहिने कन्धेपर लगावे तब यह पढे । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् । फिर हृदयमें लगावे तब यह पढे । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ॥

अनन्तर प्रोक्षणीपात्रमेंके घीको देहमें लगाय दो वार आचमन कर एक पात्रमें साढे सात सेर चावल और रौप्य दक्षिणा रखकर पूर्णपात्र ब्रह्माको देवे । अमुकके स्थानमें ब्रह्माके गोत्र और नामको उच्चारण करे ।

ॐ अद्य कृतैतत्समावर्तनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

ब्रह्मा पूर्णपात्र लेके ' ॐ स्वस्त्यस्तु ' कहे । फिर ब्रह्मचारी अग्नि वरुण और गुरुको प्रणाम करे ।

अमुकगोत्रोऽमुकप्रवरः अमुकशर्माहं भो वैश्वानर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वामभिवादये । भो वरुणदेव त्वामभिवादये । भो गुरो त्वामभिवादये ॥

तब आचार्य ब्रह्मचारीको आशीर्वाद देवे कि । आयुष्मान् भव सौम्य । फिर कलशोंके आगे बिछे हुए कुशोंपर ब्रह्मचारी पूर्व वा उत्तरमुख बैठे और जल लेके भूमिपर छोडे और यह पढे ।

ॐ येप्स्वन्तरग्नय इति प्रजापति ऋषिः आपो देवता यजुर्जलग्रहणे विनियोगः ।

फिर आंबके पत्तेसे पहले कुंभमेंसे जल लेके भूमिपर छोडे और यह पढे ।

ॐ येप्स्वन्तरग्नयः प्रविष्टा गोह्य उपगोह्यो मयूषो मनोहास्खलोविरुजस्तनूदूषुरिन्द्रियहा तान्विजहामि ॥

फिर कुंभसे जल लेवे तब यह पढे । यो रोचनस्तमिह गृह्णामि । फिर भूमिपर जल छोडे तब यह पढे । ॐ तेन तमिति प्रजापतिऋषिः आपो देवता यजुरभिषेचने विनियोगः ॥

फिर पहले कुंभसे आंबके पत्तोंसे अथवा चुल्लूमें जल लेके अपने शिरपर छोडे और यह पढे ।

ॐ तेन तमभिषिंचामि श्रियै यशसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय ॥

फिर दूसरे कुंभसे जल लेके भूमिपर छोडे और यह पढे ।

ॐ येप्स्वन्तरग्नयप्रविष्टा गोह्य उपगोह्यो मयूषो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनोहारखलोविरूजस्तनूदूषुरिन्द्रियहातान्विजहामि ॥

फिर कुंभसे जल लेवे तब यह पढे ।

यो रोचनस्तमिह गृह्णामि ॥

फिर जल लेके भूमिपर छोडे और यह पढे ।

ॐ येन श्रियमिति प्रजापति ऋषिः आपो देवता अभिषेचने विनियोगः ॥

फिर शिरपर जल छोडे तब यह पढे ।

ॐ येन श्रियमाकृणुतां येनावमृश्यतां सुरां येनाक्षावभ्यषिंचतां यद्वां तदश्विना यशः ॥

इसी प्रकार तीसरे कुंभका जलभी पूर्वोक्त वचन पढकर भूमिपर छोडे और ग्रहण करे । फिर आचमनीसे जल लेके भूमिपर छोडे और यह पढे ।

आपोहिष्ठेत्यादीनां सिन्धुद्वीप ऋषिः आपो देवता गायत्री छन्दः अभिषेचने विनियोगः ॥

फिर शिरपर जल छोडे और यह पढे ।

आपोहिष्ठामयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन महेरणाय चक्षसे ॥

अनन्तर चौथे कुंभका जलभी पूर्वोक्त वचन पढकर भूमिप[र] छोडे और ग्रहण करे । फिर आचमनीसे जल लेके [भू]मिपर छोडे और यह पढे ।

[ॐ] यो वः शिवतम इति प्रजापति ऋषिः आपो [देवता गा]यत्री छन्दः अभिषेचने विनियोगः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फिर शिरपर जल छिरके और यह पढे ।

ॐ यो वः शिमतमो रसस्तस्य भाजयते हनः उशतीरिव मातरः ॥

एवं पूर्व कहे अनुसार पांचवें कुंभका जल ग्रहण करे और आचमनीसे जल लेके भूमिपर छोडे तब यह पढे ।

ॐ तस्मा अरंगेति प्रजापति ऋषिः आपो देवता गायत्रीछन्दः अभिषेचने विनियोगः ॥

फिर शिरपर जल छोडे और यह पढे ।

ॐ तस्मा अरंग मामवः यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथाच नः ॥

फिर उन्हीं मंत्रोंको पढकर जल लेवे और मौन धारण कर शिरपर मार्जन करे और छोडे । फिर आचमनीसे जल लेके भूमिपर छोडे और यह पढे ।

ॐ उदुत्तममिति शुनःशेफ ऋषिः मेखला देवता गायत्रीछन्दः मेखलामोचने विनियोगः ॥

फिर शिरकी ओरसे मेखलाको उतारे और यह पढे ।

ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यम ७ श्रथाय अथावयमादित्यव्रतेतवानागसोअदितयेस्याम ।

फिर मौन हो दंड व मेखलाको भूमिपर धरे और मृगचर्म व कोपीनभी उतारे फिर आचार्य ब्रह्मचारीको वस्त्र हिराय दो वार आचमन करावे फिर ब्रह्मचारी आचमनीसे लेकें । भूमिपर छोडे ।

मयूषो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

...जापति ऋषिः आदित्यो देवता शक्वरी छन्दः सू...पस्थाने विनियोगः ॥

फिर दोनों हाथ जोडकर सूर्यको प्रणाम कर यह पढे ।

ॐ उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात् प्रातर्यावभिरस्थाद्दशसनिरसि दशसनिं माकुर्वा विदन्मागमय । उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात् दिवायावभिरस्थाच्छतसनिरसि शतसनिं माकुर्वा विदन्मागमय । नद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात्सायं यावभिरस्थात्सहस्रसनिरसि सहस्रसनिं माकुर्वा विदन्मागमय ॥

फिर कुमार दहीमें तिल मिलाय खावे और आचमन कर मुंडन कराय बारह अंगुलकी गूलरकी दातून लेवे ।

द्वादशांगुलविप्राणां क्षत्रियाणां दशांगुलम् ॥
अष्टांगुलं च वैश्यानां दन्तधावनमीरितम् ॥ १ ॥

ब्राह्मण ब्रह्मचारी बारह अंगुल, क्षत्रिय दश अंगुल, वैश्य आठ अंगुलकी दातून लेवे यही प्रमाण दातूनका कहा है ॥ १ ॥

फिर जल लेके भूमिपर छोडे औ...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ॐ प्रणापानाविति प्रजापति ऋषि ...जयते ... देवते यजुः चन्दनोपग्रहणे विनियोगः ॥

फिर केशर कस्तूरी मिला हुआ चन्दन दोनों हाथोंकी गदरियोंमें लगाय मुखपर लगावे और यह पढे ।

ॐ प्राणापानौ मे तर्पय चक्षुर्मे तर्पय श्रोत्रं मे तर्पय ॥

अनन्तर दोनों हाथ धोय भूमिपर जल छोडे और यह पढे ।

पितर इति प्रजापत्यश्विसरस्वतीन्द्रा ऋषयः पितरो देवता यजुः सौत्रामण्ये विनियोगः ॥

फिर वायें घुटनेको पृथ्वीमें टेककर अपसव्य हो दक्षिणमुख हो तीन कुशोंको ले द्विगुण कर भूमिपर विछाय तिल जल ले उन कुशोंपर छोडे और यह पढे । ॐ पितरः शुन्धध्वम् ॥

फिर सव्य हो आचमनीसे जल लेके पूर्वमुख हो पृथ्वीपर छोडे और यह पढे । सुचक्षा इति प्रजापति ऋषिः अक्षिर्णादेवते यजुः चन्दनग्रहणे विनियोगः ॥

फिर चंदन सब अंगोंमें लगाय यह पढे । सुचक्षा अहमक्षिभ्यां भूयास ँ सुवर्चा मुखेन सुश्रुत कर्णाभ्यां भूयासम् ॥

ॐ उदुत्तमं वरुणपाश करे तहां पहले विनियोग फिर श्रथायअथावयमादित्यव्रतेतवानागेसा ... जल छोडे यह मंत्र

फिर मौन हो दंड व मेखलाको भूमिपर धरे और ... व कोपीनभी उतारे फिर आचार्य ब्रह्मचारीको वस्त्र हिराय दो वार आचमन करावे फिर ब्रह्मचारी आचमनीसे ... । भूमिपर छोडे ।

मयूपो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ीत धारण करे उसका विनियोग और मंत्र यह है । ापवीतमिति परमेष्ठी ऋषिः लिङ्गोक्ता देवता त्रिष्टुप्छन्दः यज्ञोपवीतपरिधाने विनियोगः । ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

फिर अंगोछा धारण करे उसका विनियोग और मंत्र यह है। ॐ यशसामेत्याथर्वण ऋषिर्लिंगोक्ता देवता त्रिष्टुप्छन्दः उत्तरीयपरिधाने विनियोगः । ॐ यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती यशो भगश्च माविदद्यशो मा प्रतिपद्यताम् ॥

अनन्तर फूलमाला पहिरे और यह विनियोग और मंत्र पढे । या अहरदिति प्रजापति ऋिषिः सुमनसो देवताऽनुष्टुप्छन्दः पुष्पग्रहणे विनियोगः । ॐ या अहरज्जमदग्निः श्रद्धायै कामेन्द्रियाय ता अहं प्रतिगृह्णामि यशसा भगेन च ॥

फिर सुवर्ण वा रुद्राक्षादिकी माला पहिरे और यह विनियोग व मंत्र पढे । यद्राशे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ष्टुप्छन्दः शिरोवेष्टने विनियोगः । ॐ ... परिवीत आगात्स उ श्रेयान्भवति जा... जयते । तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयंतः ॥

फिर जामा आदि पहिरे और अलंकार धारण करे और यह विनियोग व मंत्र पढे । ॐ अलंकरणमिति भरद्वाज ऋषिः अलंकरणदेवता उष्णिकछन्दः अलंकरणे विनियोगः । ॐ अलंकरणमसि भूयोऽलंकरणं मे भूयाः ॥

फिर नाइनसे नहखुर कराय दस्तूर दिलवाय नेत्रोंमें अंजन लगवाय यह विनियोग और मंत्र पढे । वृत्रस्येति प्रजापति ऋषिः अंजनं देवता गायत्री छन्दः चक्षुरंजने विनियोगः । ॐ वृत्रस्याक्षिकनीनकश्चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि ॥

फिर नाईसे दर्पण लेके देखे तब यह विनियोग व मंत्र पढे । रोचिष्णुरिति प्रजापति ऋषिः आदर्शो देवता उष्णिक् छन्दः आदर्शप्रेक्षणे विनियोगः । ॐ रोचिष्णुरसि ॥

फिर छतरी धारण करे तब यह विनियोग और मंत्र पढे । ॐ उदुत्तमं वरुणपा... छत्रं देवता बृहद्गायत्री श्रथायअथावयमादित्यव्रतेतवानागसो...वरियान

फिर मौन हो दंड व मेखलाको भूमिपर धरे और ... व कोपीनभी उतारे फिर आचार्य ब्रह्मचारीको वस्त्र हिराय दो वार आचमन करावे फिर ब्रह्मचारी आचमनीसे ...ढे । भूमिपर छोडे ।

मयूषो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

...पानहोः ग्रहणे विनियोगः । ॐ प्रतिष्ठे-स्थो। ...तो मापातम् ॥

फिर बांसिका दंड धारण करे तब यह विनियोग और मंत्र दढे । विश्वाभ्य इति याज्ञवल्क्य ऋषिः दंडो देवता त्रिष्टुप्छन्दः दंडग्रहणे विनियोगः । ॐ विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्पारिपाहि सर्वतः ॥

फिर ब्रह्मचारी काखमें पुस्तक दवाय दंड कमंडलु हाथमें लेके काशीजीको पढनेके निमित्त चले तब आचार्य पूंछे । कुत्र गच्छसि—कहां जाते हो ? तब ब्रह्मचारी उत्तर देवे कि । काश्याम् पठनार्थम्—काशीजी पढनेके निमित्त जाता हूं । तब आचार्य कहे कि । भो बटो ! त्वमिहागच्छ अत्रैवाहं प्रपाठयिष्ये—हे ब्रह्मचारिन् ! तुम लौट आओ हम तुमको यहीं पढा देंगे । फिर बालक लौटकर बैठ जावे तब ब्रह्मचारीके कुटुम्बी व रिश्तेदार लोग ब्रह्मचारीको तिलक करके जो कुछ देना चाहें सो देवें इसको टिकावनि कहते हैं ।

अब संक्षेपमें स्नातकके...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न कूपे वेक्षेत वृक्षारोहणं फलत्रोटन

न कूंएमें झांके न वृक्षपर चढे और न फल तों

अमार्गेण न गच्छेत् । नग्नो न स्नायात् । न सन्धिवेलायां शयीत् । कुराह न चले, नंगा होकर न स्नान करे, न संध्यासमय सोवे ।

न विषमभूमिं लंघयेत् । अश्लीलं वाक्यं नोपवदेत् । विषमभूमिको नहीं फांदे, निर्लज्जताके वचन कभी नहीं कहे ।

उदितास्तसमयकाले सूर्यं न पश्येत् । जलमध्ये सूर्यच्छायां न पश्येत् । उदय और अस्तसमय सूर्यको नहीं देखे जलके बीच सूर्यकी छायाको नहीं देखे ।

देवे वर्षति न गच्छेत् । उदके नात्मानं पश्येत् । मेघ वर्षता हो तब न जावे, जलमें अपना स्वरूप नहीं देखे ।

अजातलोम्नीं प्रमत्तां पुरुषाकृतिं षण्ढां च स्त्रियं दृष्ट्वा नोपहसेत इत्यादि ॥ जिस स्त्री वा पुरुषके रोम न हों, जो पागल हो जिसकी आकृति पुरुषके समान हो तथा

ॐ उदुत्तमं वरुणपा नहीं हँसे इत्यादि ।

अथायअथावयमादित्यव्रतेतवानागसोग

फिर मौन हो दंड व मेखलाको भूमिपर धरे और व कोपीनको उतारे फिर आचार्य ब्रह्मचारीको वस्त्र हिराय दो वार आचमन करावे फिर ब्रह्मचारी आचमनीसे भूमिपर छोडे ।

मयूखे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विनियोग करे । त्र्यायुषमिति नारायण ऋषिः अग्निर्देवता उष्णिक् छन्दः त्र्यायुषकरणे विनियोगः । फिर स्रुवासे वेदीकी भस्म लेके दाहिने हाथकी छंगुनियाके पासकी अंगुलीसे मस्तकपर लगावे और यह पढे । ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः । फिर कंठमें लगावे तब यह पढे । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् । फिर दाहिनी भुजामें लगावे तब यह पढे । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् । यदि आचार्य यह वचन पढे तो 'तन्नो' के स्थानमें 'तत्ते' ऐसा पढे ।

अनन्तर ब्रह्मचारी आचार्यके मस्तकपर तिलक देके अक्षत चिपकाय बहुतसी दक्षिणा देके प्रणाम करे तब आचार्य कलशके जलको कुशोंसे ब्रह्मचारीपर छिरके और यह पढे ।

सुरास्त्वामभिषिंचंतु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणो विभुः ॥ १ ॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः ।
ब्रह्मणासहितः शेषो दिक्पालाः पान्तु त्वां सदा ॥२॥

तदनन्तर ब्रह्मचारी अनेक ब्राह्मणोंको देनेके निमित्त हाथमें भूयसी दक्षिणा लेके संकल्प करे । ॐ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छोडे और यह पढे । ॐ श्रीवर्चस्वमायुष्... जयते ... घात्पवमानं महीयते धान्यं धनं पशुं ...लाभं शतसम्वत्सरं दीर्घमायुः ॥

फिर उपनयनसंस्कारमें कहे अनुसार फूलमाला कलशपर चढावे और हाथ जोडकर प्रार्थना करे तब यह पढे ।

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽहं क्षम्यतां देव क्षमस्व परमेश्वर ॥ १ ॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर ॥ २ ॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्यभावेन रक्ष त्वं परमेश्वर ॥ ३ ॥

हाथमें अक्षत लेके कुमार देवविसर्जन करे और यह पढे

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् ।
इष्टकामप्रसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥ १ ॥

फिर अक्षत लेके अग्निपर छोडे और यह पढे ।

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर ।
... तत्र गच्छ हुताशन ॥ १ ॥

ॐ उदुत्तमं वरुणपा... श्रथायअथावयमादित्यव्रतेतवानागसो... टीकासहिता ...

फिर मौन हो दंड व मेखलाको भूमिपर धरे और ... व कोपीनभी उतारे फिर आचार्य ब्रह्मचारीको वस्त्र हिराय दो वार आचमन करावे फिर ब्रह्मचारी आचमनीसे ल... पढे । भूमिपर छोडे ।

मयूपो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu